ओरछेश

स्मृति ग्रन्थ

ओरछेश-स्मृति-ग्रन्थ

[स्वर्गीय महाराजा श्री वीरसिंह जू देव के विषय में संस्मरण]

सम्पादक

बनारसीदास चतुर्वेदी

सहायक

यशपाल जैन

प्रकाशचन्द्र चतुर्वेदी

प्राप्य-स्थल

बनारसीदास चतुर्वेदी

मुहल्ला चौबान, फीरोजाबाद (आगरा)

सूचिका

अध्याय		लेखक	पृष्ठ
	चार शब्द	पं० बनारसीदास चतुर्वेदी	
	भूमिका	पं० श्रीनारायण चतुर्वेदी	
१.	पुण्य कथा	श्री वियोगी हरि	१
२.	महाराज श्री वीरसिंह जूदेव 'ओरछेश'	स्व० वृन्दावनलाल वर्मा	४
३.	स्वर्गीय ओरछेश की प्रगतिशीलता	बनारसीदास चतुर्वेदी	१५
४.	महाराज वीरसिंह जूदेव 'ओरछेश'	बनारसीदास चतुर्वेदी	२२
५.	पत्र लेखक 'ओरछेश'	बनारसीदास चतुर्वेदी	२५
६.	मधुकर शाह की परम्परा	श्री कृष्णकिशोर द्विवेदी	२६
७	स्वर्गीय महाराज श्री वीरसिंह जूदेव	स्व० गौरीशंकर द्विवेदी 'शंकर'	३१
८.	ओरछेश का काव्य-प्रेम	स्व० बालकृष्णदेव भट्टाचार्य राजगुरु	४१
९.	स्व० महाराज वीरसिंह जूदेव	स्व० पीताम्बर अध्वर्यू	४५
१०.	ओरछेश का मानव रूप	यशपाल जैन	४८
११.	ओरछेश का निजी पुस्तकालय	कृष्णानन्द गुप्त	५५
१२.	ओरछेश नरेश श्री वीरसिंह जूदेव	जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी	६१
१३.	ओरछेश श्री वीरसिंह जूदेव	नन्दराम कठैल	६५
१४.	ओरछेश का औसान	ले० कर्नल सज्जनसिंह	७१
१५.	ओरछेश महाराज वीरसिंह देव	रमाशंकर शुक्ल	७४
१६.	ओरछेश का काव्य-प्रेम	रामचरण ह्यारण 'मित्र'	७९
१७.	मानव-'देव'	स्व० शोभाचन्द्र जोशी	८४
१८.	ओरछेश की विशेषतायें	स्व० डॉ० हीरालाल अमृतलाल कोठारी	८६
१९.	ओरछेश, खिलाड़ी के रूप में	स्व० त्रिभुवन कुमार पाँडे	८९
२०.	वह वीर पुरुष थे	स्व० हरबलसिंह	९१
२१.	श्रीमान ओरछेश के तीन रूप	श्री बद्री नारायण सिंह	९३

२२. प्रजा वत्सल ओरछेश	श्री डी० आर० डोंगरे	९७
२३. महाराज श्री वीरसिंह जूदेव	रामगोपाल चतुर्वेदी	९९
२४. स्वर्गीय श्री वीरसिंह जूदेव	श्री अमृतलाल चतुर्वेदी	१०३
२५. मधुर स्मृतियाँ	स्व० नरोत्तम दास चतुर्वेदी	१०६
२६. लोक-गीत की विजय	देवेन्द्र सत्यार्थी	१०९
२७. प्रांत निर्माण में महाराजा ओरछा का योग	रामगोपाल चतुर्वेदी	११२
२८. हिन्दी प्रेमी ओरछेश (देव पुरस्कार के जनक)	हरी विष्णु अवस्थी	११८
२९. ओरछेश के तथा उनके नाम कुछ पत्र		१२०
३०. बुन्देलखण्ड	श्री मौलवी मंजर साहब	१४७
३१. स्वर्गीय ओरछेश श्रद्धांजलि	स्वर्गीय कालिदास कपूर	१४९
३२. वे अन्तःपुर	शिवानी	१५२

भूमिका

•

लेखक : श्रीनारायण चतुर्वेदी

भाई बनारसीदास जी चतुर्वेदी का एक पत्र मिला जिसके कुछ अंश ये थे—

"लीजिये आपके आदेश का पालन कर दिया।

ओरछेश ग्रंथ करीब-करीब तैयार हो चुका है। लोग बिल्कुल भूल चुके हैं। टीकमगढ़ और वहाँ की जनता ने भी उनकी स्मृति रक्षार्थ कुछ नहीं किया।

इस ग्रन्थ में कुछ पैसा मेरा लगा है। शेष एक अन्य सज्जन का, जो अपना नाम प्रकट नहीं करना चाहते।

\+ \+ \+ \+ \+

भूमिका आपको ही लिखनी है

किसी महाराज के बारे में आजकल कुछ लिखना **धारा के सर्वथा विपरीत है।"**

अवश्य ही मैं इस आरोप को स्वीकार करता हूँ कि मैं कई वर्षों से उन्हें ओरछेश के स्मृति ग्रंथ निकालने को बार-बार लिखता रहा। इसका कारण यह था कि भाई बनारसीदास जी को मैं 'अभिनंदन ग्रंथ सम्पादकाचार्य' कहता हूँ। उन्होंने कितने महापुरुषों के अभिनंदन ग्रंथों का सम्पादन किया है, उनकी ठीक-ठीक गणना करना भी मेरे लिए कठिन है। फिर वे शहीदों के स्मृति रक्षार्थ पुस्तकें निकालने में जुट गये जो वास्तव में 'स्मृति ग्रंथ' हैं। उनका ओरछेश से इतना दीर्घकालीन और इतना घनिष्ट सम्बन्ध रहा कि मेरी समझ में उन ऐसे अभिनन्दन और स्मृति-ग्रंथों के विशेषज्ञ सम्पादक का ओरछेश का स्मृति ग्रंथ निकालना आवश्यक ही नहीं, कर्तव्य भी है। इस कार्य के लिए सबसे अधिक उपयुक्त व्यक्ति वे ही हैं। इसीलिए उन्होंने मेरे उलाहने को 'आदेश' की संज्ञा दी है। वे मुझसे एक दो नहीं, पूरे आठ मास बड़े हैं। भला, मेरा ऐसा दकियानूसी व्यक्ति अपने से ज्येष्ठ व्यक्ति को 'आदेश' देने की धृष्टता कर सकता है!

मैं भूमिका लिखने की कला नहीं जानता। इसलिए मैं भरसक इस अनावश्यक औपचारिक कार्य से बचता हूँ। कभी-कभी नये लेखकों के आग्रह पर उनके उत्साह वर्द्धन करने के लिए भूमिका लिख भी देता हूँ। किन्तु भाई बनारसीदास जी ऐसे महान